ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 16 अंक 29 कुल पृष्ठ-8 1 से 7 जुलाई, 2021 दयानन्दाब्द 198 सृष्टि सम्वत् 1960853122 सम्वत् 2078 आ. कृ.-07

आर्य समाज के संस्थापक, महान दार्शनिक तथा समाज सुधारक, प्रखर राष्ट्रवादी संन्यासी महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का नाम

यू.जी.सी. ने 19वीं एवं 20वीं सदी के दार्शनिकों की सूची में शामिल न करके किया है अक्षम्य अपराध

समस्त प्रान्तीय सभाएँ, शिक्षण संस्थाएँ, गुरुकुल, आर्य समाजें तथा आर्यजन व्यक्तिगत स्तर पर यू.जी.सी. एवं शिक्षामंत्री को विरोध पत्र लिखकर संगठन शक्ति का परिचय दें

– स्वामी आर्यवेश

आर्य समाज के प्रवर्तक, प्रखर सुधारवादी, महान दार्शनिक एवं वेदज्ञ महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी भारत के महान चिन्तक एवं वेद, दर्शन, एवं उपनिषदों के मर्मज्ञ थे। उन्होंने समाज में व्याप्त विविध कुरीतियों, विकृतियों एवं धर्म के क्षेत्र में फैले हुए अन्धविश्वास एवं रूढ़ियों के विरुद्ध जन–जागरण किया। स्वामी जी ने वेदों का अनुशीलन किया और उसी के अनुसार समाज के सर्वांगीण परिष्कार का निश्चय किया। महर्षि ने सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, तथा राजनैतिक विषयों पर अपना दार्शनिक पक्ष प्रस्तुत कर सही दिशा प्रदान करने का भागीरथ प्रयास किया था। उन्होंने वैदिक संस्कृति की सुरक्षा एवं उसके वर्चस्व को स्थापित करने के लिए अन्धविश्वासों, कुसंस्कारों, कुरीतियों, रूढ़ियों पर कठोर प्रहार किया। भारतीय समाज के पुनर्जागरण में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के योगदान को सदैव स्मरण किया जायेगा। उनकी कार्यशैली में जहाँ धार्मिक मान्यताओं और सामाजिक व्यवस्थाओं को बदलकर वैज्ञानिक एवं वेदाधारित सोच के द्वारा परिवर्तन लाना का एक महत्त्वपूर्ण कार्य था। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के चिन्तन व कार्यों में सतत गतिशीलता तथा प्रगतिशील विचारधारा स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। धार्मिक तथा सामाजिक क्षेत्र के साथ–साथ उन्होंने राजनैतिक और प्रशासनिक क्षेत्र में भी अपने समकालीन समाजसुधारकों की तुलना में अधिक प्रगतिशील विचार दिये। उनके द्वारा किये गये कार्यों को आज भी समाज में स्पष्ट रूप से अनुभव किया जा सकता है। महर्षि दयानन्द जी ने अपने समकालीन सभी दार्शनिकों को भी अपनी अद्भुत प्रतिभा एवं महान पाण्डित्य से अत्यधिक प्रभावित किया था। ''महान दार्शनिक योगी अरविन्द ने महर्षि दयानन्द जी के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा था कि जैसे पर्वतों में हिमालय का एवरेस्ट सबसे ऊँचा शिखर है उसी प्रकार विश्व के सभी दार्शनिकों में महर्षि दयानन्द भी एक शिखर महापुरुष हैं।''

विगत दिनों यू.जी.सी. द्वारा 19वीं एवं 20वीं शताब्दी के 15 दार्शनिकों के नाम अपनी वैबसाईट पर अपलोड किये गये हैं। जिन महापुरुषों के नाम उस सूची में हैं वे सभी समाज में अपना विशेष स्थान रखते हैं, लेकिन प्रखर राष्ट्रवादी, प्रसिद्ध समाज सुधारक, महान दार्शनिक तथा भारतीय समाज के जाज्वल्यवान नक्षत्र स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का नाम इस सूची में सम्मिलित न करना अत्यन्त आश्चर्य की बात है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपने समय में समकालीन महापुरुषों की तुलना में हर क्षेत्र में अधिक महत्त्वपूर्ण कार्य किये तथा अपनी विशेष प्रतिष्ठा स्थापित करके सभी वर्गों का सम्मान प्राप्त किया। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का नाम 19वीं व 20वीं शताब्दी के दार्शनिकों की सूची में सम्मिलित न करके वास्तव में यू.जी.सी. ने महर्षि दयानन्द जी का घोर अपमान किया है और करोड़ों आर्यों की भावनाओं को ठेस पहुँचाई है। यू.जी.सी. के इस निर्णय से सम्पूर्ण आर्यजगत में आक्रोश की लहर व्याप्त है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने यू.जी.सी. के इस कुकृत्य की घोर निन्दा करते हुए तथा करोड़ों आक्रोषित आर्यों की भावनाओं को ध्यान में रखते हुए भारत के शिक्षामंत्री श्री रमेश पोखरियाल जी को पत्र लिखकर माँग की है कि यू.जी.सी. द्वारा घोषित दार्शनिकों की सूची में अविलम्ब महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का नाम शामिल किया जाये जिससे भावनात्मक रूप से जुड़े करोड़ों आर्यों का क्रोध शान्त हो सके। सम्बन्धित पत्र अविकल रूप से यहाँ प्रकाशित किया जा रहा है। ●

।।ओ३म्।।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

WORLD COUNCIL OF ARYA SAMAJ

''दयानन्द भवन'', 3/5, आसफ अली रोड
(रामलीला मैदान), नई दिल्ली-110002
"Dayanand Bhawan", 3/5, Asaf Ali Road
(Ramlila Ground), New Delhi-110002

फा. सं. सार्व. आ. प्र.सभा/21/ 1525 30-06-2021

सेवा में,

माननीय श्री रमेश पोखरियाल निशंक जी
शिक्षामंत्री, भारत सरकार
शिक्षा मंत्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली-1

विषय :- यू.जी.सी. द्वारा 19वीं एवं 20वीं शताब्दी के दार्शनिकों में महर्षि दयानन्द सरस्वती का नाम सम्मिलित न किये जाने के सम्बन्ध में।

महोदय,

आशा है ईश कृपा से आप स्वस्थ एवं सानन्द होंगे। निवेदन है कि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू.जी.सी.) ने दर्शन का नया पाठ्यक्रम अपनी बैवसाईट पर कुछ समय पूर्व अपलोड किया है। इस पाठ्यक्रम की इकाई-5(V) में समकालीन 19वीं एवं 20वीं शताब्दी के दार्शनिकों के जो नाम अपलोड किये गये हैं उनमें स्वामी विवेकानन्द, श्री अरविन्द, महात्मा गांधी सहित 15 लोगों के नाम लिखे गये हैं जिनमें स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का नाम नहीं है। जबकि वे समकालीन भारतीय दर्शन के शिखर पुरुष थे। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सत्यार्थ प्रकाश एवं वेद भाष्य जैसी रचनाओं के द्वारा अपने उच्च दार्शनिकता एवं पाण्डित्य का परिचय दिया हुआ है। उसके बावजूद समकालीन दार्शनिकों की सूची में उनका नाम सम्मिलित न करना हास्यास्पद लगता है। जबकि हम सभी को सर्वविदित है कि जिन दार्शनिकों के नाम इस सूची में अपलोड किये गये हैं, इनमें से अधिकांश पर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का विशेष प्रभाव रहा है।

नेट एवं सोशल मीडिया पर यह सूचना प्रसारित होने से कि यू.जी.सी. ने समकालीन दार्शनिकों की सूची में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का नाम नहीं दिया है इससे आर्य समाज संगठन एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनुयायियों में असंतोष एवं आक्रोश है। आप जैसे शिक्षाविद एवं महर्षि दयानन्द के समर्थक के भारत सरकार में मंत्री रहते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती की उपेक्षा होना अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण है।

अतः आपसे प्रार्थना है कि आप अपने शिक्षा मंत्रालय की ओर से इस विषय पर स्वयं हस्तक्षेप करके इन दार्शनिकों की सूची में महर्षि दयानन्द सरस्वती का नाम सम्मिलित कराकर आर्यजनों एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनुयायियों की भावनाओं का सम्मान करें। इसके साथ ही आप यू.जी.सी. को निर्देश जारी करें कि दार्शनिकों की वर्तमान अपूर्ण सूची को अपनी बैवसाइट से हटाकर उस सूची में महर्षि दयानन्द सरस्वती के नाम को सम्मिलित करके संशोधित सूची को अपलोड करें। आशा है आप उपरोक्त विषय पर अपने मंत्रालय की ओर से शीघ्र उचित कार्यवाही करते हुए तत्काल यू.जी.सी. को निर्देश जारी कर कृतार्थ करेंगे।

सधन्यवाद,

भवदीय

(स्वामी आर्यवेश)
सभा प्रधान

प्रतिलिपि :- सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु।
श्री धीरेन्द्र पाल सिंह
चेयरमैन, यू.जी.सी., बहादुरशाह जफर मार्ग
आई.टी.ओ., नई दिल्ली-110002

दूरभाष : 011-23274771, 23260985, टेलीफैक्स : 011-23274216
ई–मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in
वैबसाईट : www.vedicaryasamaj.com

आर्य समाज के संस्थापक तथा प्रखर क्रान्तदर्शी संन्यासी महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जीवन के इतिहास से छेड़छाड़ करने के मामले में

सार्वदेशिक सभा के द्वारा की गई त्वरित कार्यवाही तथा आर्य संगठन के आक्रोश एवं सोशल मीडिया के सहयोग के परिणामस्वरूप आर्य समाज हुआ विजयी

लक्ष्मी प्रकाशन ने माँगी सार्वजनिक माफी

विदित हो कि गत् सप्ताह आर्य समाज के तेजस्वी युवा संन्यासी स्वामी सच्चिदानन्द जी ने दूरभाष से सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी को सूचित किया कि हरियाणा के 4–5 विश्वविद्यालयों में बी.एड. द्वितीय वर्ष के छात्रों को पढ़ाई जा रही 'लिंग विद्यालय तथा समाज' नामक पुस्तक में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जीवन एवं कार्यों के सम्बन्ध में तथ्यहीन एवं गलत जानकारी दी गई है। इस पुस्तक के लेखक भिवानी जिले के रहने वाले डॉ. राजेश कुमार वशिष्ठ हैं तथा इस पुस्तक को भिवानी के लक्ष्मी प्रकाशन नामक संस्थान ने प्रकाशित किया है। यह पुस्तक महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक, चौ. रणवीर सिंह विश्वविद्यालय जीन्द, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र, गुरु जम्भेश्वर विश्वविद्यालय हिसार, चौ. बंसीलाल विश्वविद्यालय भिवानी आदि विश्वविद्यालयों के बी.एड. द्वितीय वर्ष के छात्रों को उपलब्ध कराई जा रही है। इसके विरुद्ध ठोस कार्यवाही होनी चाहिए। स्वामी सच्चिदानन्द जी द्वारा दी गई इस सूचना के आधार पर सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने उक्त पुस्तक के पृष्ठ संख्या–71 पर प्रकाशित बेबुनियाद, भ्रान्त एवं तथ्यहीन बातों को पढ़ा तो वे आश्चर्यचकित रह गये और उन्होंने तुरन्त प्रभाव से हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल खट्टर को पत्र लिखकर प्रकाशक एवं लेखक पर कठोर कानूनी कार्यवाही करने का आग्रह किया। (सम्बन्धित अविकल रूप से यहाँ प्रकाशित किया जा रहा है।) स्वामी जी ने मुख्यमंत्री को भेजे गये पत्र की प्रतिलिपि सभी विश्वविद्यालयों के कुलपतियों के नाम भी प्रेषित की। इसके अतिरिक्त सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने एक वीडियो के माध्यम से सम्पूर्ण आर्य जगत का आहवान किया कि उक्त विषय पर आर्य समाज की सभी स्थानीय, प्रान्तीय एवं सभी अन्य इकाईयाँ अपने–अपने स्तर से विरोध पत्र भेजकर प्रकाशक एवं लेखक के विरुद्ध कठोर कार्यवाही की मांग करें। जैसे ही सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी तथा स्वामी सच्चिदानन्द जी की वीडियो प्रकाशक व लेखक के पास पहुँची और उन्होंने उसे सुना तो वे हक्के–बक्के रह गये और इधर–उधर से अपने बचाव का रास्ता तलाशने लगे। उन्होंने भिवानी के कुछ आर्यजनों के माध्यम से सार्वदेशिक सभा में भी सम्पर्क करने का प्रयास किया और अपनी गलती व भूल स्वीकार करते हुए क्षमा प्रार्थना की। किन्तु सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने सार्वदेशिक न्याय सभा के अध्यक्ष तथा वरिष्ठ अधिवक्ता श्री आर.एस. तोमर, सभा मंत्री प्रो. विट्ठलराव, सभा कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी, मिशन आर्यावर्त के निदेशक तथा सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के प्रधान स्वामी आदित्यवेश जी सहित प्रमुख सहयोगियों के साथ विचार–विमर्श करने के बाद निश्चय किया कि जब तक पुस्तक के लेखक व प्रकाशक सार्वजनिक रूप से यह घोषित नहीं करेंगे कि उनके द्वारा हुई इस महान गलती का उन्हें एहसास हो चुका है और इस पाप के लिए वे समूचे देश व आर्य जगत से क्षमा मांगते हैं, जितनी पुस्तकें प्रकाशित कर बेची गई हैं या पुस्तक विक्रेताओं के पास रखी हैं या उनके गोदाम में उपलब्ध है उन सबको नष्ट नहीं कर देते, जब तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के प्रामाणिक जीवन चरित्र के लाखों ट्रैक्ट प्रकाशित कराकर वे लोगों में नहीं बाँट देते और जब तक वे यह घोषित नहीं करते कि यदि हम अपने वचन पर पूरे खरे नहीं उतरते तो हमें जो भी दण्ड दिया जायेगा हमें स्वीकार होगा, तब तक सामान्य माफीनामे से उन्हें मुक्त नहीं किया जा सकता। किन्तु लेखक व प्रकाशक के द्वारा उपरोक्त शर्तों को स्वीकार करने के उपरान्त इस विषय को समाप्त किया जा रहा है।

आर्य समाज की इस ऐतिहासिक विजय के लिए सार्वदेशिक सभा की ओर से मैं प्रान्तीय सभाओं के अधिकारियों को तथा सोशल मीडिया पर एक्टिव युवा एवं जुझारू साथियों को धन्यवाद और साधुवाद देता हूँ कि उनके सहयोग से आर्य समाज ने अपेक्षित विजय प्राप्त की है। इसके साथ ही मैं आशा करता हूँ कि यू.जी.सी. के मैटर पर भी आपका इसी तरह सकारात्मक सहयोग मिलेगा।

।।ओ३म्।।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

WORLD COUNCIL OF ARYA SAMAJ

"दयानन्द भवन", 3/5, आसफ अली रोड
(रामलीला मैदान), नई दिल्ली-110002
"Dayanand Bhawan", 3/5, Asaf Ali Road
(Ramlila Ground), New Delhi-110002

फा. सं. सार्व. आ. प्र.सभा/21/ 1520 29-06-2021

सेवा में,

माननीय श्री मनोहर लाल जी
मुख्यमंत्री, हरियाणा सरकार, चण्डीगढ़

विषय :- हरियाणा के विश्वविद्यालयों में बी.एड. पाठ्यक्रम में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के सम्बन्ध में गलत, तथ्यहीन एवं भ्रामक जानकारी पढ़ाये जाने के सम्बन्ध में।

मान्यवर,

आशा है ईश कृपा से आप स्वस्थ एवं सानन्द होंगे। इस पत्र के माध्यम से मैं आपके संज्ञान में लाना चाहता हूँ कि महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, रोहतक एवं हरियाणा के कुछ अन्य विश्वविद्यालयों में बी.एड. पाठ्यक्रम में द्वितीय वर्ष के छात्रों को डॉ. राजेश कुमार वशिष्ठ द्वारा लिखित एवं लक्ष्मी प्रकाशन भिवानी द्वारा प्रकाशित 'लिंग विद्यालय तथा समाज' नामक पुस्तक में पृष्ठ संख्या-71 पर महर्षि दयानन्द सरस्वती के सम्बन्ध में अनेक गलत, तथ्यहीन एवं भ्रामक जानकारियाँ छात्रों को पढ़ाई जा रही हैं। (प्रकाशक ने पुस्तक के ऊपर विश्वविद्यालयों का नाम लिखकर घोषित किया है कि "एम.डी.यू., सी.आर.एस.यू, सी.डी.एल.यू., के.यू.के." आदि में यह पुस्तक पढ़ाई जाती है।) इस पुस्तक में प्रकाशित कुछ तथ्यहीन बातें निम्न प्रकार हैं :-

1. **महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जन्म सन् 1824 ई. में हुआ था जबकि पुस्तक में सन् 1814 ई. लिखा गया है।**
2. **महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का निर्वाण (मृत्यु) सन् 1883 ई. में हुई थी जबकि पुस्तक में सन् 1889 ई. लिखा गया है।**
3. **महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के गुरु स्वामी विरजानन्द दण्डी थे जबकि पुस्तक में उनका गुरु स्वामी विवेकानन्द जी को बताया गया है।**
4. **गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार की स्थापना स्वामी श्रद्धानन्द जी ने की थी जबकि पुस्तक में स्वामी दयानन्द सरस्वती जी को संस्थापक बताया गया है।**
5. **लाहौर में 'दयानन्द एंग्लो वैदिक कॉलेज' (डी.ए.वी.) की स्थापना महात्मा हंसराज जी के द्वारा की गई थी जबकि पुस्तक में स्वामी दयानन्द जी सरस्वती द्वारा स्थापित लिखा गया।**
6. **स्वामी दयानन्द सरस्वती जी स्वदेशी एवं वैदिक शिक्षा पद्धति के सदैव समर्थक रहे जबकि पुस्तक में अंग्रेजी शिक्षा पद्धति का भी समर्थक बताया गया है।**
7. **शुद्धि आन्दोलन स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा चलाया गया था जबकि पुस्तक में स्वामी दयानन्द जी द्वारा चलाया हुआ दशार्या गया है।**

इस पुस्तक में इस प्रकार की अनेक तथ्यहीन, गलत एवं भ्रामक पाठन सामग्री लिखकर पुस्तक के लेखक डॉ. राजेश कुमार वशिष्ठ द्वारा बी.एड. के द्वितीय वर्ष के छात्रों को दिग्भ्रमित करने का प्रयास किया जा रहा है जो पूर्ण रूप से गलत है। यह तथ्यहीन एवं गलत सामग्री हरियाणा के महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक के अतिरिक्त अन्य कई विश्वविद्यालयों में बी.एड. द्वितीय वर्ष के छात्रों को पढ़ाई जा रही है। इसके परिणामस्वरूप महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के सम्बन्ध में इन छात्रों को पूर्ण रूप से गलत जानकारी मिलेगी और भविष्य में जब यही छात्र अध्यापक बनेंगे तो आगे आने वाले छात्रों को भी यही तथ्यहीन, गलत जानकारी देंगे जिससे देश की भावी युवा पीढ़ी को भी महर्षि दयानन्द जी के सम्बन्ध में गलत जानकारी के साथ शिक्षा प्राप्त होगी और वह वास्तविक जानकारी से वंचित रह जायेंगे।

अतः आपसे प्रार्थना है कि आप हरियाणा सरकार की ओर से प्रदेश के जिन विश्वविद्यालयों में यह पुस्तक पढ़ाई जा रही है, उन सभी विश्वविद्यालयों को शीघ्र आदेश जारी करके इस तथ्यहीन, गलत एवं भ्रामक जानकारी वाली पुस्तक को पाठ्यक्रम से हटाने का निर्देश जारी करने का कष्ट करें तथा पुस्तक के प्रकाशक एवं लेखक पर कानूनी कार्यवाही करके करोड़ों आर्यजनों की भावनाओं का सम्मान करें। इस विषय पर महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनुयायियों एवं आर्य समाज संगठन में गहरा रोष व्याप्त है। यदि सरकार की ओर से शीघ्र कार्यवाही नहीं की गई, तो आर्य समाज संगठन एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनुयायी आन्दोलन एवं कानूनी कार्यवाही करने पर विवश होंगे। आशा है आप ऐसी स्थिति उत्पन्न नहीं होने देंगे और मेरी प्रार्थना पर हरियाणा सरकार की ओर से शीघ्र कार्यवाही करके इस पुस्तक को पाठ्यक्रम से हटाने का आदेश जारी करेंगे तथा की गई कार्यवाही से अधोहस्ताक्षरी को सूचित करने का कष्ट करेंगे।

सधन्यवाद,

भवदीय

(स्वामी आर्यवेश)
सभा प्रधान

प्रतिलिपि :- सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु।

1. कुलपति, महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा
2. कुलपति, चौ. रणवीर सिंह विश्वविद्यालय, जीन्द, हरियाणा
3. कुलपति, चौ. देवीलाल विश्वविद्यालय, सिरसा, हरियाणा
4. कुलपति, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र, हरियाणा

दूरभाष : 011-23274771, 23260985, टेलीफैक्स : 011-23274216
ई–मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in
वैबसाईट : www.vedicaryasamaj.com

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा महिला उपदेशिकाओं का किया गया अभिनन्दन

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सर्वप्रथम महिलाओं को शिक्षित तथा उनके सशक्तिकरण के लिए किये महत्त्वपूर्ण कार्य

– स्वामी आर्यवेश

मानव के निर्माण में माँ का योगदान सबसे बड़ा

– प्रो. विट्ठलराव आर्य

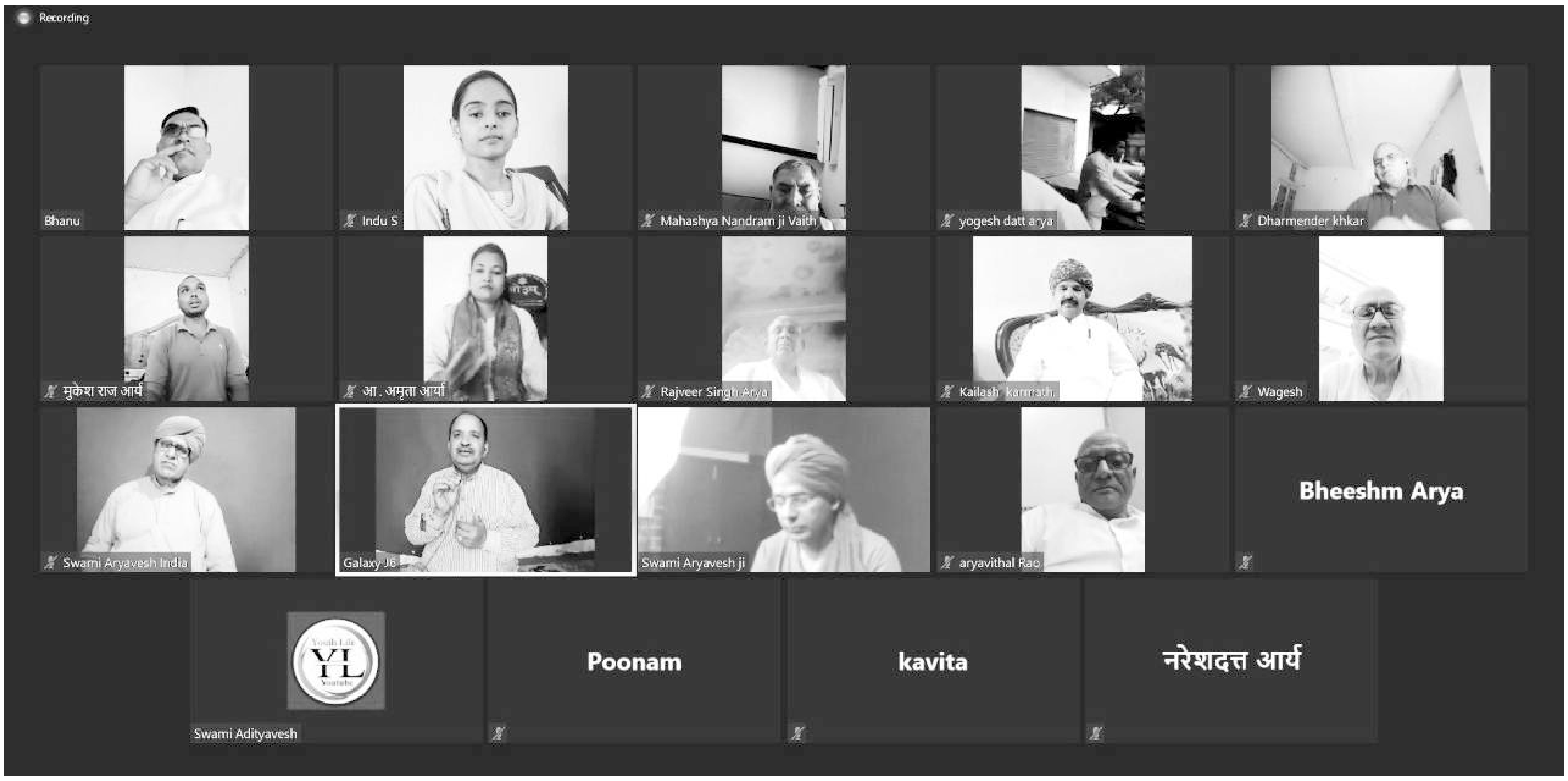

आर्य समाज के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के तत्वावधान में 20 जून, 2021 को महिला उपदेशिकाओं का ऑनलाइन सम्मान का कार्यक्रम आयोजित किया गया। स्वामी इंद्रवेश विद्यापीठ आश्रम टिटौली से सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने इस कार्यक्रम की अध्यक्षता की। मुख्य अतिथि हैदराबाद से सार्वदेशिक सभा के महामंत्री प्रो.विट्ठलराव आर्य रहे। विशिष्ट अतिथि कलकत्ता से भजनोपदेशक परिषद के महामंत्री श्री कैलाश कर्मठ रहे।

इस अवसर पर अपने उद्बोधन में प्रो. विट्ठलराव आर्य ने कहा कि मानव के निर्माण में माँ का योगदान सबसे बड़ा होता है। क्योंकि माता निर्माता भवति की उक्ति इस देश में सदियों से प्रचलित है। आर्य समाज की उपदेशिका राष्ट्र निर्माण में अपनी विशेष भूमिका निभाती आई हैं।

बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या ने कहा कि आज माँ को भी अपनी जिम्मेदारी को समझने की जरूरत है। माँ जितनी सावधानी से बच्चे की परवरिश करेगी, समाज के नवनिर्माण में उतना ही बड़ा योगदान दे सकेगी।

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि स्वामी दयानंद सरस्वती ने ही सबसे पहले महिला अधिकारों की वकालत की। जिस समय महिला को पैरों की जूती समझा जाता था, उस समय ऋषि दयानंद ने उनके मान सम्मान व स्वाभिमान की लड़ाई लड़ी। उनके गौरवमयी इतिहास की गाथाओं को दोबारा दुनिया के सामने रखा। स्वामी जी ने बताया कि जब बच्चियों को शिक्षित करना एक तरह से पाप समझा जाता था, ऐसे समय में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने जन–जागरण करके बच्चियों की शिक्षा के लिए गुरुकुल खुलवाये। उनका मानना था कि जब तक महिला शिक्षित नहीं होगी तब तक वह अपने परिवार तथा बच्चों का सही से पालन नहीं कर पायेगी। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का ही यह प्रताप है कि महिलायें उच्च शिक्षा प्राप्त कर पुरुष के कन्धे से कन्धा मिलाकर चल रही है। आज सभी बहनों का सम्मान उनके कार्यों का सम्मान है। श्री कैलाश कर्मठ ने कहा कि महिलाओं का उपदेशक बनकर समाज मे प्रचार करना साहस का कार्य है। महिलाओं के वेद प्रचार का सकारात्मक प्रभाव समाज पर पड़ता है।

आर्य महिला उपदेशिका सम्मान समारोह

आर्य समाज कोविड रिलीफ अभियान के राष्ट्रीय संयोजक स्वामी आदित्यवेश जी ने बताया कि कोरोना काल में उपदेशक, संन्यासी व गुरुकुलों को आर्थिक मदद के लिए सभा ने ये सम्मान के कार्यक्रम निश्चित किये हैं।

आज जिन उपदेशक बहनों का सम्मान हुआ उनमें विशेष रूप से अंजली आर्या करनाल, निष्ठा विद्यालंकार लखनऊ, कल्याणी आर्या, हिसार, संतोष गन्नौर, क्षमा पुरवार, मथुरा, स्वेता आर्या अम्बाला, उषा आर्या रेवाड़ी, साध्वी पुष्पा शास्त्री रेवाड़ी, मिथिलेश शास्त्री हरिद्वार, सुलभा हापुड़ आदि मुख्य रहीं।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वैदिक विरक्त सम्मान समारोह का किया गया भव्य आयोजन

संन्यासियों, वानप्रस्थियों तथा नैष्ठिक ब्रह्मचारियों को अंग वस्त्र, सम्मान पत्र तथा राशि देकर किया गया सम्मानित

दिनांक 23 जून, 2021 को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के विशाल कक्ष में वैदिक विरक्त सम्मान समारोह का भव्य आयोजन किया गया। इस सम्मान समारोह की अध्यक्षता विश्व की आर्य समाजों के सर्वोच्च संगठन के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने की। इस अवसर पर सम्मान समारोह में उपस्थित संन्यासीवृन्द के अतिरिक्त विशिष्ट वानप्रस्थीजन, नैष्ठिक ब्रह्मचारी तथा समाज के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

इस अवसर पर जूम एप के माध्यम से पूरे देश के वरिष्ठ कार्यकर्ता तथा सम्मानित आर्यजन जुड़े हुए थे। सम्मान समारोह में त्यागी, तपस्वी, वेदों के प्रकाण्ड विद्वान् स्वामी चन्द्रवेश जी, अनेकों गुरुकुलों के संस्थापक तथा वैदिक विरक्त मण्डल के प्रधान स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती, क्रांतिकारी संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द जी, युवा क्रांतिकारी संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी, स्वामी सोम्यानन्द जी सहित अनेकों संन्यासीवृन्द उपस्थित थे। सार्वदेशिक सभा के मंत्री तथा आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना के प्रधान प्रो. विट्ठलराव आर्य, सभा के कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी जी, सभा के उपमंत्री स्वामी नित्यानन्द जी, उपमंत्री श्री मधुर प्रकाश शास्त्री, मानव सेवा प्रतिष्ठान के कार्यकारी अध्यक्ष श्री रामपाल शास्त्री जी सहित अनेकों महानुभावों ने जूम एप के माध्यम से अपने विचार प्रस्तुत किये।

इस अवसर पर सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने संन्यासियों की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि समय–समय पर आर्य समाज के संन्यासियों ने देश में क्रांति करके दिखाई है। स्वामी इन्द्रवेश जी, स्वामी अग्निवेश जी जैसे संन्यासियों ने विभिन्न आन्दोलनों के माध्यम से तथा सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध जन–आन्दोलन खड़ा करके समाज को सन्मार्ग पर ले जाने का सफल प्रयास किया। उन्होंने अपने कार्यों से समाज में क्रांति पैदा कर दी। उन्होंने कहा कि आर्य समाज की परम्परा रही है कि जब कभी भी देश पर विपत्ति आई है, चाहे वह प्राकृतिक हो अथवा सामाजिक हो आर्य समाज ने विभिन्न प्रकार के आन्दोलन करके तथा सहायता कार्य करके जनमानस को त्राण प्रदान किया है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा निर्दिष्ट मार्ग पर चलकर हमारे संन्यासियों ने, विद्वानों ने समाज को सही दिशा प्रदान की है। स्वामी जी ने कहा कि आज के वातावरण में जब धार्मिक पाखण्ड, अन्धविश्वास, भ्रष्टाचार, नारी उत्पीड़न जैसी अनेकों समस्याएँ देश के सामने मुँह बाये खड़ी है तो संन्यासियों का उत्तरदायित्व और अधिक बढ़ जाता है। उन्होंने कहा कि उपरोक्त कुरीतियों की तरफ किसी भी संगठन तथा राजनैतिक दल का ध्यान नहीं है, केवल आर्य समाज ही इन बुराईयों से समाज को निकालने के लिए संघर्ष कर रहा है। अतः वर्तमान परिप्रेक्ष्य में संन्यासियों को स्थान–स्थान पर जागरूकता अभियान चलाने का कार्य करना चाहिए तथा समाज को इन बुराईयों से बचाने के लिए सुनियोजित कार्यक्रम चलाकर कर्मपथ पर बढ़ना चाहिए। स्वामी जी ने युवा क्रांतिकारी संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी की कर्मठता का उदाहरण देते हुए संन्यासियों को कर्मपथ पर उतरने के लिए प्रेरित किया।

इस अवसर पर भारी संख्या में उपस्थित संन्यासियों, नैष्ठिक ब्रह्मचारियों तथा वानप्रस्थियों का अंग वस्त्र, सम्मान पत्र तथा धनराशि देकर अभिनन्दन तथा सम्मान किया गया।

सम्मान समारोह को सम्बोधित करते हुए स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी ने कहा कि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में संन्यासियों का उत्तरदायित्व काफी बढ़ जाता है। संन्यासीवृन्द गाँव–गाँव और नगर–नगर में जाकर धार्मिक पाखण्ड, भ्रष्टाचार, अन्धविश्वास, नारी उत्पीड़न जैसी सामाजिक बुराईयों के सम्बन्ध में आम जनता को जागरूक करें और महर्षि दयानन्द जी के स्वप्न को साकार करें। स्वामी जी ने युवा संन्यासियों को भी कर्मक्षेत्र में उतरने के लिए प्रेरित किया।

जूम एप के माध्यम से सभा के मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य जी ने संन्यासियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि यह देश ऋषियों का देश है। आज उन ऋषियों की परम्पराओं को पुनर्जीवित करने तथा प्राचीन भारतीय संस्कृति को जन–जन तक पहुँचाने की आवश्यकता है और इस कार्य को सबसे ज्यादा कुशलता से संन्यासी ही कर सकते हैं।

सभा के कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी जी ने अपने उद्‌बोधन में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के द्वारा इस संक्रमणकाल में किये जा रहे कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि स्वामी आर्यवेश जी आर्य समाज की प्राचीन परम्पराओं को जीवित रखते हुए तन–मन–धन से समाज की सेवा कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि सभा के हर कार्य में मेरा पूर्ण सहयोग हमेशा रहेगा।

इस अवसर पर युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी ने संन्यासियों से अपील की कि वे टिटौली में स्थापित स्वामी दयानन्द ऑक्सीजन बैंक के बारे में ज्यादा से ज्यादा लोगों को अवगत करायें जिससे जरूरतमंदों की सहायता की जा सके।

बहन प्रवेश आर्या ने स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ की ओर से संन्यासियों व गुरुकुलों को ऑक्सीमीटर दान करने की बात कही जिससे कि स्थान–स्थान पर पीड़ित व्यक्तियों की सहायता की जा सके।

इस अवसर पर क्रांतिकारी संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द जी ने कोरोना संकटकाल में अपने द्वारा किये गये कार्यों की चर्चा करते हुए कहा कि यह अत्यन्त खुशी का अवसर है कि आर्य समाज के प्रतिष्ठित संन्यासियों का अभिनन्दन सार्वदेशिक सभा के द्वारा किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि कोरोनाकाल में आर्य समाज ने बहुत बड़ा कार्य किया है। उन्होंने कहा कि आर्य समाज हमेशा देश के सामने मुद्‌दा प्रस्तुत करता है और उस पर अमल करने के लिए जी–जान से कार्यक्षेत्र में उतर पड़ता है।

स्वामी नित्यानन्द जी ने अपने सम्बोधन में कहा कि आर्य समाज एक क्रांतिकारी संगठन है और हमेशा से देश के ज्वलन्त मुद्‌दों को अपना लक्ष्य बनाकर कार्य करता है। उन्होंने वर्तमान समय में कोरोना महामारी के अलावा देश के किसानों के साथ हो रहे अन्याय पर ध्यान आकर्षित कराया कि आज हमारे देश के किसान लगभग 8 महीने से सड़कों पर हैं परन्तु वर्तमान सरकार उनकी बातों पर कोई ध्यान नहीं दे रही है। यह देश का दुर्भाग्य है कि हमारे किसानों के साथ अत्याचार हो रहा है। महर्षि दयानन्द जी ने भी किसानों को राजाओं का राजा बताया है, इसलिए हम सबको किसानों के साथ खड़े होकर उनकी जायज मांगों के लिए उनका साथ देना चाहिए।

सम्मान समारोह में अनेकों महानुभावों ने आग्नेय वस्त्रों में सुसज्जित संन्यासियों के त्याग, तपस्या तथा कार्यों का बखान करते हुए संन्यासियों को आर्य समाज की रीढ़ की हड्डी बताया। उन्होंने कहा कि आर्य समाज के संन्यासियों ने देश पर आये हर संकट का सामना आर्य समाज के झण्डे के नीचे रहकर किया है और आज देश एक तरह से संक्रमणकाल से गुजर रहा है। अतः हमारे संन्यासीवृन्दों को अपनी उज्ज्वल परम्पराओं का ध्यान रखते हुए पूरे उत्साह के साथ कार्यक्षेत्र में उतरने के लिए तत्पर हो जाना चाहिए।

इससे पूर्व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में स्वामी आर्यवेश जी के सान्निध्य में 15 जून, 2021 को भजनोपदेशकों का सम्मान किया गया। आर्य गुरुकुलों का सम्मान 18 जून, 2021 को किया गया। महिला उपदेशिकाओं का सम्मान 20 जून, 2021 को किया गया। इसके अतिरिक्त कोरोना योद्धाओं का सम्मान 25 जून, 2021 को किया गया और यज्ञ से वातावरण शुद्धि महाअभियान के कार्यकर्ताओं का सम्मान 28 जून, 2021 को किया गया।

23 जून को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का जन्मदिवस भी था अतः इस अवसर पर विशेष यज्ञ किया गया तथा सभी महानुभावों ने स्वामी जी को बधाई एवं शुभकामनाएँ देते हुए उनके उत्तम स्वास्थ्य तथा दीर्घ जीवन की कामना की। स्वामी आर्यवेश जी ने सभी महानुभावों का आभार व्यक्त किया।

महर्षि दयानंद ऑक्सीजन सेवा केंद्र टिटौली जनता को किया समर्पित

वसुधैव कुटुंबकम की भावना से कोरोना संक्रमण के दौरान आर्य समाज ने युद्ध स्तर पर सेवा कार्य किया

– स्वामी आर्यवेश

आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका तथा नैरोबी ने भेजे ऑक्सीजन कन्संट्रेटर

टिटौली स्थित स्वामी इंद्रवेश विद्यापीठ, आश्रम में 25 मई, 2021 को महर्षि दयानंद ऑक्सीजन केंद्र का शुभारंभ हो गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता आर्य समाज के वरिष्ठ सन्यासी स्वामी चंद्रवेश जी ने की जबकि कार्यक्रम का उद्घाटन आर्य समाज के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि नाड़ी वैद्य कायाकल्प रोहतक के संचालक वैद्य सत्यप्रकाश आर्य रहे। उन्होंने रीबन काटकर केंद्र को जनता को समर्पित किया।

इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि वसुधैव कुटुंबकम की भावना से कोरोना संक्रमण के दौरान आर्य समाज ने युद्ध स्तर पर सेवा कार्य प्रारंभ किया हुआ है। आज का यह केंद्र भी उसी कड़ी का हिस्सा है। आर्य समाज टिटौली सहित पूरे क्षेत्र में ऑक्सीजन की पूर्ति के लिए पूरा प्रयास करता रहेगा। इस केंद्र के लिए ईस्ट अफ्रीका आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य समाज नैरोबी (केनिया) द्वारा दान दिए गए ऑक्सीजन कन्संट्रेटर प्रयोग में लाये जाएंगे। स्वामी जी ने उनका आभार भी प्रकट किया। उन्होंने बताया कि वर्तमान में आर्य समाज जहां वातावरण शुद्धि महाअभियान चला रहा है वहीं भोजन वितरण, ओषधि वितरण, काढ़ा वितरण, अंत्येष्टि में सामग्री सहयोग आदि के कार्य भी कर रहा है। स्वामी जी ने बताया कि कोरोना संक्रमण काल में हमारे उपदेशक, भजनोपदेशक, संन्यासी तथा महिला भजनोपदेशिकाओं को काफी परेशानी हुई है। आर्य समाजों के कार्यक्रम न हो पाने के कारण इन सभी को आर्थिक स्थिति पर प्रभाव पड़ा है। अतः सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की तरफ से इन सभी आर्य समाज के कर्णधारों को सम्मानित किया गया तथा सहायता राशि भी उपलब्ध कराई गई। आर्य समाज पूरी निष्ठा एवं तत्परता के साथ इस संकट काल में मानवता की सेवा करने के लिए कटिबद्ध है।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सत्यप्रकाश आर्य ने कहा इम्युनिटी बढ़ाने के लिए योग व आयुर्वेद का सहारा लेना चाहिए। इसको अपनी जीवनशैली का हिस्सा बनाना चाहिए। हमारे ऋषियों की परम्परा को पुनर्स्थापित करना चाहिए। हम ताकत के नाम पर भारी व गरिष्ठ चीजों का प्रयोग न करके जल्दी हजम होने वाली वस्तुओं का सेवन करें। स्वामी चंद्रवेश जी ने कहा कि कोरोना जैसे संक्रमण लोगों के व्यक्तिगत खानपान व आचरण बिगड़ने व अज्ञानता से फैल रहा है। आर्य समाज कोविड रिलीफ अभियान के राष्ट्रीय संयोजक स्वामी आदित्यवेश जी ने कहा कि आर्य समाज ने पूरे देश में दो हजार से ज्यादा स्थानों पर ट्रॉली व स्थानीय यज्ञों का आयोजन शुरू किया हुआ है। उन्होंने कहा कि यज्ञ टोटका नही बल्कि एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है। सरपंच एशोसिएशन रोहतक के अध्यक्ष सुमित मकड़ौली ने कहा कि कोरोना के दौर में सफाई का विशेष ध्यान रखें। उन्होंने कहा कि वो अपने गाँव के प्रत्येक घर में हवन सामग्री का एक एक पैकेट भेंट करेंगे ताकि वातावरण और ज्यादा शुद्ध हो सके।

बेटी बचाओ अभियान की संयोजक प्रवेश आर्या ने बताया कि www-missionaryavart-com पर जाकर ऑक्सीजन के लिए आवेदन कर सकते हैं।

इस कार्यक्रम में राजेश हुड्डा खिड़वाली ने अपने विचार रखे। बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या, स्वामी ब्रह्मानंद, अर्जुन सिंह, अनिल हुड्डा, घुसकानी, रामचन्द्र ठेकेदार, महावीर ठेकेदार, ऋषिराज, अजयपाल, रजनेश, मनीष, राजबीर वशिष्ठ, डॉ. नारायण, डॉ. सुरेंद्र सिंह, मदन रंगा आदि उपस्थित रहे।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के द्वारा भजनोपदेशक सम्मान समारोह का किया गया आयोजन

आर्य समाज के मीडिया मैन हैं भजनोपदेशक

– स्वामी आर्यवेश

भजनोपदेशक प्रचार के आधुनिक माध्यमों को भी अपनाएं

– प्रो. विट्ठलराव आर्य

आर्य समाज की समस्त संस्थाओं के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के द्वारा 15 जून, 2021 को स्वामी इंद्रवेश विद्यापीठ आश्रम रोहतक से ऑनलाइन भजनोपदेशक सम्मान समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने की तथा मुख्य वक्ता हैदराबाद से सभा मंत्री व आर्य प्रतिनिधि सभा तेलंगाना के प्रधान प्रो. विट्ठलराव आर्य जी रहे। मुख्य अतिथि भारतीय आर्य भजनोपदेशक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सहदेव बेधड़क रहे। स्वामी आर्यवेश जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि भजनोपदेशक आर्य समाज के मीडिया मैन हैं। इन्हीं के कंधों पर वैदिक विचारधारा के प्रचार प्रसार का भार है।इन्ही उपदेशकों ने आजादी के आंदोलन में भी भूमिका निभाई व आजादी के तराने गाये। आज भी ये गाँव गाँव जाकर धार्मिक अंधविश्वास, पाखंड, अश्लीलता, नशाखोरी, नारी उत्पीडन व भ्रष्टाचार जैसी सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध समाज को जागरूक करने का कार्य कर रहे हैं। कोरोना महामारी ने इनको भी प्रभावित किया है। सभा ने इनके आर्थिक सहयोग का निर्णय लिया है। इन विपरीत परिस्थितियों में भी प्रचार प्रसार को समर्पित सभी उपदेशकों को स्वामी जी ने ऑनलाइन सम्मान पत्र भी भेंट किये। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता प्रो.विट्ठलराव आर्य ने कहा कि आज आर्य समाज यदि देश दुनिया के कोने कोने तक फैला है तो इसका अधिकांश श्रेय भजनोपदेशकों को जाता है। उन्होंने सभी से प्रचार के आधुनिक माध्यमों से जुड़ने का आह्वान भी किया।

श्री सहदेव बेधड़क व नरेश दत्त आर्य ने कहा कि आर्य भजनोपदेशक तैयार करने के लिए एक योजना बनाई जाए ताकि भविष्य में सैंकड़ों नए उपदेशक तैयार किये जा सकें। स्वामी जी ने इस कार्य में हर सम्भव मदद का आश्वासन दिया। आर्य समाज कोविड रिलीफ अभियान के संयोजक स्वामी आदित्यवेश जी ने कार्यक्रम का संचलान करते हुये बताया कि आज एक सौ भजनोपदेशकों का सम्मान किया गया है। 18 जून को आर्य समाज के गुरुकुलों के सम्मान का कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा।

आज जिनका सम्मान हुआ उनमें मुख्य रूप से चौधरी छोटू राम के विशेष सहयोगी व आर्य समाज के उपदेशक चौधरी पृथ्वी सिंह बेधड़क के सुपौत्र व भारतीय भजनोपदेशक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष चौधरी सहदेव बेधड़क बागपत,परिषद के महामंत्री कैलाश कर्मठ, कलकत्ता, नरेश दत्त, बिजनोर, रामनिवास आर्य पानीपत, वैद्य नंदराम महेंद्रगढ़, भानु प्रकाश आर्य बरेली, योगेश दत्त आर्य बिजनोर, राजबीर सिंह आर्य मुजफ्फरनगर, डॉ. अमृता आर्या दिल्ली आदि सहित लगभग 100 भजनोपदेशकों का सम्मान किया गया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में गुरुकुलों के सम्मान समारोह का किया गया भव्य आयोजन

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली संस्कारों की जननी

– स्वामी आर्यवेश

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को मजबूत किया जाए
– स्वामी प्रणवानन्द

गुरुकुलों में सिर्फ शिक्षित ही नही संस्कारित भी किया जाता है
– प्रो. विट्ठलराव आर्य

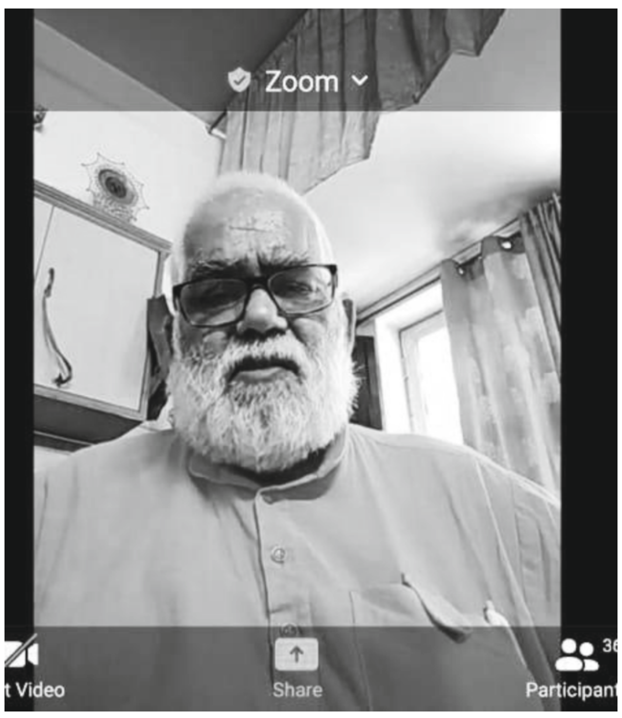

आर्य समाज की समस्त संस्थाओं की शिरोमणि संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के तत्वावधान में 18 जून, 2021 को स्वामी इंद्रवेश विद्यापीठ आश्रम टिटौली के माध्यम से ऑनलाइन आर्य गुरुकुल सम्मान समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमद्दयानंद वैदिक गुरुकुल परिषद के राष्ट्रीय प्रधान स्वामी प्रणवानंद ने की। बैठक में विशेष सान्निध्य उड़ीसा के आमसेना स्थित गुरुकुल के संस्थापक स्वामी धर्मानंद सरस्वती जी तथा सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का रहा।

आर्य गुरुकुल सम्मान समारोह में मुख्य अतिथि दक्षिण अफ्रीका से डॉ. रामबिलास बिसराम रहे। सार्वदेशिक सभा के महामंत्री हैदराबाद से प्रो. विट्ठल राव आर्य, दक्षिण अफ्रीका से आरती सानंद, प्रबोध वेदालंकार, अमेरिका से डॉ. सतीश प्रकाश, आचार्य प्रमोद, दबथला, आचार्या धारणा, आचार्य चैतन्यदेव, अलीगढ, आचार्या प्रियंवदा, नजीबाबाद, आचार्य धनंजय गुरुकुल पौंधा, आचार्य जयकुमार, मंझावली , ओमप्रकाश आर्य,आबू पर्वत, स्वामी सुखानन्द, गंगानगर, बलजीत आर्य, डोभी, राजमल ढाका, धीरणवास, आचार्य आनंदप्रकाश अलियाबाद, उदयन आर्य हैदराबाद, राजन मान गुरुकुल लोवाकलां, अग्निदेव गुरुकुल कालवा,डॉ. गायत्री, बनारस, आचार्या सुकामा, रुड़की, आचार्या सूर्यादेवी आदि उपस्थित रहे।

इस अवसर पर सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि गुरुकुल शिक्षा प्रणाली संस्कारों की जननी है। उन्होंने कहा कि गुरुकुलों में मानव निर्माण के साथ साथ संस्कृति को बचाने व ऋषियों की परंपरा को आगे बढ़ाने के कार्य किये जा रहे हैं। स्वामी जी ने कहा कि यदि समाज को संस्कारित करना है, राष्ट्र का निर्माण करना है तो विशेष रूप से शिक्षा को अपनी भारतीय संस्कृति, इतिहास व प्राचीन गौरव से जोड़ना होगा। गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली को बढ़ावा देना होगा। स्वामी जी ने कहा कि गुरुकुलों में कोलाहल से दूर रमणीक विद्याध्ययन केन्द्रों पर ज्ञानार्जन होता है। जहां अन्य विद्याओं के साथ वेदों का ज्ञान दिया जाता है तथा बच्चों में चारित्रिक ज्ञान कूट–कूट कर भरा जाता है। बच्चों को संस्कारित करते हुए उनका सर्वांगीण विकास किया जाता है। अतः गुरुकुलों को बढ़ाना होगा तथा उनका सहयोग करना हम सबका कर्त्तव्य है।

कार्यक्रम के अध्यक्ष स्वामी प्रणवानंद सरस्वती जी ने कहा कि गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को मजबूत किया जाए। क्योंकि लार्ड मैकाले की शिक्षा प्रणाली से हम नैतिक रूप से सक्षम व्यक्ति तैयार नही कर सकते। राष्ट्रवादी युवाओं के निर्माण व मातृ पितृ सेवाभावी बच्चे गुरुकुलों से ही सम्भव हैं।

सभा के मंत्री प्रो.विट्ठलराव आर्य ने कहा कि गुरुकुलों में शिक्षा के साथ संस्कार भी दिए जाते हैं जो कि आज के भौतिकवादी युग में बहुत आवश्यक हैं।

मुख्य अतिथि डॉ. रामबिलास बिसराम ने कहा कि हमारे पूर्वज 1855 से 1860 के आसपास दक्षिण अफ्रीका पहुंचे। यहां आकर भी हमारे पूर्वज प्राचीन परम्पराओं से जुड़े रहे। भाई परमानन्द, भवानी दयाल संयासी, शंकरानंद सरस्वती तथा नरदेव वेदालंकार आदि ने यहां भारतीय वैदिक संस्कृति से जोड़ने में अहम भूमिका निभाई। उन्होंने अपने हिंदी स्कूल व हिंदी शिक्षा संघ की चर्चा भी की। गुरुकुल परिषद के महामंत्री आचार्य धनंजय ने कहा कि जल्द ही राजस्थान सरकार के वैदिक बॉर्ड बनाने के निर्णय पर वैदिक पाठ्यक्रम के निर्धारण के लिए एक डेलिगेशन राजस्थान के मुख्यमंत्री से मिलेगा।

कार्यक्रम का संचालन आर्य समाज कोविड रिलीफ अभियान के संयोजक स्वामी आदित्यवेश ने किया तथा सह संयोजक रामपाल शास्त्री रहे।

आत्मिक संतुष्टि के लिए करें – दान

– ब्रजेन्द्र श्रीवास्तव

वह इकतारा गुंजाता और गाता हुआ घर के सामने से निकल रहा था, गायन वादन में लय और ताल के साथ स्वर में अक्खड़पना होते हुए भी कर्णप्रियता थी। इसलिए बगीचे में काम करते-करते रुक गया। ध्यान देकर सुना :

सबद निरन्तर से मन लागा, मलिन वासना त्यागी,

उठत-बैठत कबहुँ न छूटै ऐसी तारी लागी।

सोचा यह कबीर की साखी लगती है। आगे उसने गाया – कहै कबीर यह उनमुनि रहनी.... तो सहसा निर्गुण कबीर को साकार करने वाले कुमार गन्धर्व याद आ गए। वाह! इसे कुछ दिया जाए – बीस रुपये, घर के भीतर गया सोचा बीस बहुत हैं दस ठीक हैं, कहीं रोज-रोज आ खड़ा हुआ तो?और जब उसके दान पात्र में डाला तो वह था पाँच रुपये का सिक्का। ऐसा क्यों हुआ कि बीस रुपये का विचार पाँच रुपये में पूरा हुआ?पर ऐसा अक्सर ही होता है। मैं शर्त तो नहीं लगाता पर बहुत संभव है, आपके साथ भी ऐसा होता होगा कि किसी याचक को देखकर जितनी वस्तु, अन्न या पैसा आप देने का विचार एकदम से करते हैं उसमें दान देते-देते कमी आ ही जाती है। दान में बढ़ोतरी कम ही होती है।

दान की तात्कालिक मनोवृत्ति पर कर्ण का एक प्रसंग है जो हमारी दानघटाऊ मनोवृत्ति की पुष्टि करता है। एक सुबह कर्ण स्नानपूर्व तेल मर्दन कर रहे थे, बाएँ हाथ में वह स्वर्ण का रत्नजटित तेल पात्र लिए थे और उसमें से तेल लेकर दाएं हाथ से शरीर में लगा रहे थे। इतने में एक याचक उपस्थित हुआ, कर्ण के समक्ष उस समय कोषाध्यक्ष उपस्थित नहीं था इसलिए कर्ण ने उस याचक को तत्काल तेल से भरा वह स्वर्णपात्र बाएं हाथ से ही भेंट कर दिया। इस पर याचक ने सविनय यह प्रश्न किया कि – 'हे दानवीर अंगराज! आप धर्म और सदाचार के ज्ञाता हैं फिर भी आपने बाएं हाथ से दान कैसे दे दिया?क्योंकि नीति यह कहती है कि समस्त धर्म-कार्य दक्षिण हाथ से ही सम्पन्न करने चाहिए।' इस पर कर्ण ने कहा – 'हे द्विज श्रेष्ठ! बाएँ हाथ में स्वर्णपात्र को दाएं हाथ से लेने में कुछ समय तो लगता ही, इसी अल्प समय में ही मेरे मन में यह विचार आ सकता था कि रत्नजटित यह स्वर्णपात्र तो बहुमूल्य है, कुछ स्वर्ण मुद्राएं ही पर्याप्त रहेंगी। दान की सात्विक वृत्ति चित्त में बहुत ही अल्प समय के लिए ठहर पाती है इसलिए मैंने चित्त में सद्वृत्ति के रहते तत्काल दान करना उचित समझा और बाएं हाथ से ही दान दे दिया है।'

ऐसा क्यों होता है कि अच्छे विचार, दान और परोपकार की भावना, वैर-द्वेष भुलाकर मित्रता का इरादा, दूसरों को क्षमा कर देने की इच्छा एक तरंग की तरह आती है तो दुबारा कम ही लौटती है। मनीषियों ने इसका एक कारण यह माना है कि मन की गति और जल की गति ऊँचे से नीचे की तरफ जाने की होती है। सांख्य दर्शन में जल की प्रकृति सत्त्व और तम इन दो गुणों का मिश्रण मानी गई है। सत्व गुण उर्ध्वगामी है जबकि तमोगुण अधोगामी। यही कारण है कि हमारा मन थोड़ी देर के लिए ऊँचे परोपकारी विचारों पर जाता तो है पर वहाँ की ऊँचाई से तुरन्त हटकर अपने स्वार्थ के निचले स्तर की तरफ चलने लगता है। ग्रीक दार्शनिकों ने वायु और अग्नि को ऊपर की ओर बढ़ने वाला उर्ध्वमुखी और जल व पृथ्वी को नीचे की तरफ बढ़ने वाला माना है। सुश्रुत ने आयुर्वेद में भी जल को सत्व और तम का मिश्रण माना है इसलिए मनुष्य का मन:शरीर रचना की दृष्टि से मन की वृत्ति या तौर-तरीका अच्छे विचारों से हटकर निकृष्ट विचारों की तरफ सहज ही जाने का रहता है, आधुनिक मनोविज्ञान इस मानसिक प्रवृत्ति को इतने स्पष्ट रूप से अभी डिफाइन नहीं कर पाया है।

प्रयत्न तो मन को ऊँचा उठाने के लिए सद्वृत्तियों की ओर ले जाने के लिए ओर वहीं बनाए रखने के लिए हमको करना होगा?वही जो हम जल को निचले स्तर से ऊपर के स्तर तक पहुँचाने के लिए करते हैं – हम बिजली की, पानी को ऊपर फेंकने वाली, मोटर अर्थात् बूस्टर पम्प लगाते हैं। अपने मन की वृत्तियों को ऊपर उठाने और उन्हें सतत उर्ध्वगामी बनाए रखने के लिए हमें अपनी इच्छाशक्ति को संकल्प से उसी तरह जोड़ना होगा जैसे हम विद्युत शक्ति को जल के पम्प से जोड़ते हैं- हमें अपना मन शुभ संकल्पमय बनाना होगा। यजुर्वेद में जो बार-बार प्रार्थना की गई है – 'मेरा मन शुभ संकल्पवान बने – तन्मे मन: शिव संकल्पमस्तु', वह इसीलिए तो की गई है।

ऐसा क्यों होता है कि अच्छे विचार, दान और परोपकार की भावना, वैर-द्वेष भुलाकर मित्रता का इरादा, दूसरों को क्षमा कर देने की इच्छा एक तरंग की तरह आती है तो दुबारा कम ही लौटती है। मनीषियों ने इसका एक कारण यह माना है कि मन की गति और जल की गति ऊँचे से नीचे की तरफ जाने की होती है। सांख्य दर्शन में जल की प्रकृति सत्त्व और तम इन दो गुणों का मिश्रण मानी गई है। सत्व गुण उर्ध्वगामी है जबकि तमोगुण अधोगामी। यही कारण है कि हमारा मन थोड़ी देर के लिए ऊँचे परोपकारी विचारों पर जाता तो है पर वहाँ की ऊँचाई से तुरन्त हटकर अपने स्वार्थ के निचले स्तर की तरफ चलने लगता है।

दान में कौन कितना आगे?दान पर आज विश्वव्यापी सर्वेक्षण हो रहे हैं कि कौन सा देश कितना धन या समय परोपकार में देता आ रहा है। इसमें बहुराष्ट्रीय कम्पनियों से लेकर आम नागरिक, सभी शामिल किए गए हैं। इस सर्वे के अनुसार अमेरिकी कम्पनियाँ और नागरिक दोनों ही, धन व समय परोपकार में लगाने में सबसे आगे हैं। जबकि भारत धर्म आध्यात्म प्रधान होने के दावे के बावजूद दानधर्म के कार्य में बहुत पीछे हैं। वास्तविकता भी यही है कि भारत में दान पर बहुत जोर धर्मग्रन्थों में तो दिया गया है पर व्यवहार में दान परोपकार एक औपचारिकता मात्र दिखाई देता है। भारत में दान परोपकार की भावना में गिरावट आने का एक बड़ा कारण है यहाँ के धर्म-ध्वज वाहकों का अर्थात् मठ, मंदिर, पुरोहित वर्ग का व्यवहार आचरण एकतरफा होता है। ये सब दान तो खूब लेते हैं, पर दान को समाज को लौटाने में कोई अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत करते नहीं दिखाई देते। भारत के सर्वाधिक धन सम्पन्न उत्तर व दक्षिण के मंदिरों व मठों का, पीठाधीश्वरों का दान, परोपकार प्राकृतिक आपदा सहायता संबंधी व्यवहार किसी तरह प्रेरक मार्गदर्शक नहीं है। कुछ स्कूल, अस्पताल, धर्मशालाएं अन्न क्षेत्र या लंगर चलाना पर्याप्त नहीं है। इलेक्ट्रॉनिक चैनलों पर दर्शकों की यह जिज्ञासा कि जून 2013 में केदारनाथ उत्तराखण्ड के खण्ड प्रलय में अटूट धन सम्पन्न ऐसे कितने धर्म संस्थानों ने मदद की?आप यह नहीं कह सकते कि जिनका आधार ही दूसरों के दान पर

टिका है वे दान क्यों करें?क्योंकि अपार सम्पत्ति जमा होने के कारण ही ऐसे धर्म संस्थानों में उत्तराधिकार या अधिकार को लेकर मुकदमे चलते हैं। आम जनता बड़े लोगों के आचरण के अनुसार ही व्यवहार करती है – 'महाजनो येन गता स: पन्था' जिस मार्ग पर महाजन बड़े लोग चलें वही मार्ग सभी को अनुकरणीय होता है। गिरधर कविराय ने इसलिए यह सलाह धनिक वर्ग को दी है कि जब घर में पैसा बढ़ जाए तो दोनों हाथों से दान देना चाहिए नहीं तो यह पैसा ले डूबता है। गिरधर कवि राय ने कहा है कि जैसे नाव में पानी भर जाने पर उसमें बैठे लोग पानी को दोनों हाथों से बाहर उलीचते हैं, ताकि नाव डूबे नहीं। उसी तरह धन को दान के माध्यम से बाहर निकालते रहने पर ही अधिक धन से होने वाले दुर्गुणों से बचा जा सकता है।

जो व्यक्ति अपनी पत्नी, बच्चे और वृद्धजनों का पालन नहीं करते हुए दान करते हैं उन्हें पुण्य के स्थान पर पाप ही मिलता है। व्यवहार में आप समाज में ऐसे बहुत से दानदाता देख सकते हैं जो अपने बीमार माता-पिता को भोजन पानी और दवा देने में झगड़ा करते हैं कि अब तुम्हारा नम्बर है दवा पानी देने का मैं कितना करूँ?फिर अपने स्वयं के बच्चों के लिए मंदिरों में दान करते हैं। इस मनोवृत्ति पर शास्त्र का कथन है कि जो व्यक्ति समर्थ होकर भी अपने स्वजनों को तो दुखी जीवन देता है, उनका पालन पोषण नहीं करता परन्तु परजनदाता बनता है दूसरों को दान देता है ऐसा दान मधु-मिश्रित विष समान अधर्म है।

वर्तमान में दान ही प्रधान धर्म या सामाजिक आचार है। काल के चार विभाजन सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग धर्म आचरण की बढ़ती-घटती स्थिति के आधार पर किए गए हैं। धर्म शब्द से भले ही सेक्यूलरवादी कुछ भी अर्थ निकालें, धर्म का व्यापक अर्थ सामाजिक आचरण ही है। महाभारत में भीम युधिष्ठिर से कहते हैं कि सभी शास्त्रों में आचार को प्रथम स्थान दिया गया है। इस आचार से ही धर्म बनता है। 'सर्व आगमानाम आचार: प्रथमं परिकल्पते, आचार प्रभवो धर्मो।' इस धर्म आचरण के चार चरण हैं सत्य, यज्ञ, तप और दान। मतान्तर से यह सत्य ज्ञान यज्ञ और दान है। सतयुग में सत्य, त्रेता में यज्ञ और द्वापर में तप और वर्तमान कलयुग में दान की प्रधानता मानी गई है। इसीलिए सन्त प्रवर तुलसी कहते हैं :-

प्रगट चारिपद धर्म के कलिमह एक प्रधान।

येन केन विधि दीने, दान करे कल्याण।।

दान की सीमा क्या हो? भागवत कथामर्मज्ञ डोंगरे महाराज ने आय का पाचवाँ भाग दान करने पर जोर दिया है, यह विभाजन उदार और धनी वर्ग के लिए ठीक लगता है। जबकि मनु ने आमदनी का दशमांश दान करने को कहा है। अर्थात् सौ रुपये आय पर 10 रुपये। इस्लाम में पूरे साल की आमदनी का एक प्रतिशत जकात अर्थात् दान-पुण्य पर खर्च करने का विधान किया गया है जिसे सभी आसानी से कर सकते हैं। ईसाइयों में भी चैरिटी पर अर्थात् दान पर बहुत जोर दिया गया है। सर्वस्वदान नहीं करना चाहिए क्योंकि इससे आजीविका नष्ट होने से दूसरों के आश्रित रहना पड़ता है, इसलिए शास्त्रों में इसे मना किया गया है। क्या निर्धन दान करें?निर्धन को दान नहीं करना चाहिए। इसके अलावा जो व्यक्ति अपनी पत्नी, बच्चे और वृद्धजनों का पालन नहीं करते हुए दान करते हैं उन्हें पुण्य के स्थान पर पाप ही मिलता है। व्यवहार में आप समाज में ऐसे बहुत से दानदाता देख सकते हैं जो अपने बीमार माता-पिता को भोजन पानी और दवा देने में झगड़ा करते हैं कि अब तुम्हारा नम्बर है दवा पानी देने का मैं कितना करूँ?फिर अपने स्वयं के बच्चों के लिए मंदिरों में दान करते हैं। इस मनोवृत्ति पर शास्त्र का कथन है कि जो व्यक्ति समर्थ होकर भी अपने स्वजनों को तो दुखी जीवन देता है, उनका पालन पोषण नहीं करता परन्तु परजनदाता बनता है दूसरों को दान देता है ऐसा दान मधु-मिश्रित विष समान अधर्म है।

क्या दान का मुहूर्त देखना चाहिए? मुहूर्त का अर्थ यदि दान लेने वालों व देने वाले को सर्वाधिक लाभ पहुंचाना है तो आपत्ति के समय धन, अन्न, जल, वस्त्र, औषधि, आश्रय आदि की तत्काल सहायता देना श्रेष्ठ है। ऐसे में पंचांग का मुहूर्त कोई नहीं देखना चाहेगा। जैसे सर्जरी इमरजेन्सी में तत्काल भी की जाती है और योजना बनाकर भी की जाती है वैसे ही दान के सम्बन्ध में समझना चाहिए। आपात् समय तत्काल दान के साथ-साथ योजना बनाकर तीर्थ, व्रत, पर्व पर दान करना एक तरह से मुहूर्त या प्रसंगवश दान करना ही है।

दान पर पलने की आलसी प्रवृत्ति गांवों में संयुक्त परिवार के दौर में घर के ऐसे संबंधी को जो घर का, बाहर का कुछ भी काम काज नहीं करते, अक्सर, मलूका सा घर में पड़े रहने वाला कहा जाता रहा है। यह मलूका कौन थे?यह थे सन्त मलूकदास जो यह मानते थे कि जो व्यक्ति पूरी तरह ईश्वर पर निर्भर हो जाता है उसकी देखभाल स्वयं राम करते हैं। सन्त मलूकदास कहते हैं।

अजगर करे न चाकरी, पंछी करे न काम।

दास मलूका कह गए, सबके दाता राम।।

सन्त मलूक ने जब ऐसा कहा होगा तब उनका भाव शरणागति का था पर आलसी लोगों ने दूसरों की उदारता व दान धर्म का लाभ लेने के लिए इसे अपना जीवनमंत्र बना लिया, तो क्या किया जाए। वैसे यह सभी जानते हैं कि कीट पतंग भले ही तनख्वाह वाली चाकीर नहीं करते पर दिनभर भोजन खोजने का श्रम तो करते ही हैं तभी दाता राम उन्हें भोजन देते हैं। दूसरों के दान से पेट भरने की और खुद कुछ न करने की जड़ता देखकर आम आदमी का दान देने को मन ही नहीं करता इसलिए पात्र को ही दान करने का आग्रह किया जाता है।

दान सामाजिक क्षमता बढ़ाने में सहायक – धनी और निर्धन वर्ग के बीच विषमता की खाई या दूरी सदैव से रहती आई है। धनी वर्ग टैक्स के माध्यम से अपना धन गरीब को देने का विरोध करेगा पर यदि उसे पुण्य होने का आश्वासन दिया जाए तो वह दान करने को तैयार हो जाता है। पुण्य एक तरह का बैंक एकाउण्ट है जिसमें दान जमा हो जाता है और 'तुम एक पैसा दोगे वह दस लाख देगा' की तर्ज पर काम करता है। धर्मशास्त्र वस्तुत: सामाजिक आचार व्यवहार में समता व न्याय के उद्देश्य से ही बने हैं इसलिए दान की महिमा बताकर सामाजिक विषमता को कम करने का प्रयास इसमें रहता है। इसलिए दान को अहंकार रहित होकर करने पर भी जोर है।

ऐसी देनी देन ज्यूं, कित सीखे हो सैन,

ज्यों ज्यों कर ऊँच्यो करो, त्यों-त्यों निचे नैन।

देनेहारा कोई और है, भेजत सो दिन रैन,

लोग भरम हम पर करें, तासो नीचे नैन।।

जैसा कि हर व्यवस्था की मूल भावना के साथ होता है, कालान्तर में इस भावना की उपेक्षा होने लगती है। हम देखते है कि फल बांटने के चित्र अखबारों में छपते हैं जो दान लेने वाले के स्वाभिमान को ठेस पहुंचाते हैं और दानदाता के अहं को बढ़ाते हैं तो आइये! हम भी विनम्रता से दान करने को अपनी आदत बनाएं।

– 269 जीवाजी नगर, ठाठीपुर ग्वालियर-474011

सत्यार्थ सौरभ से साभार

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/2021-23
Licence to Post without prepayment of Postage. U (c)-289/2021-23

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई–मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के संरक्षण तथा युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी के निर्देशन तथा व्यवस्था में

कोरोना संक्रमणकाल में वातावरण शुद्धि हेतु औषधीय तत्वों से युक्त सामग्री तथा शुद्ध गाय के घृत से एक माह तक निरन्तर चल यज्ञ का किया गया आयोजन

लगभग दो हजार स्थानों पर विशेष यज्ञ करके वातावरण शुद्धि का किया गया सराहनीय कार्य

आर्य समाज तथा स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ के संयुक्त तत्वावधान में टिटौली तथा आस–पास के क्षेत्र में ट्रैक्टर ट्राली के द्वारा लगभग एक माह तक निरन्तर विशाल यज्ञ किया गया। इस यज्ञ में औषधीय तत्वों से युक्त सामग्री तथा गाय के शुद्ध देशी घी से आहुतियाँ प्रदान की गई। सारे क्षेत्र में यज्ञ के अतिरिक्त औषधीय धूम्र का भी प्रवाह किया गया। स्वामी आदित्यवेश जी तथा उनकी पूरी टीम ने टिटौली तथा आस–पास के क्षेत्रों में यज्ञ का आयोजन करके अत्यन्त सराहनीय कार्य किया है। उनके इस प्रयास को देखते हुए तथा यज्ञ की अपील पर लगभग दो हजार स्थानों पर नियमित यज्ञ के आयोजन होते रहे। इसके अतिरिक्त आर्य वीरों ने आम जनता को कोरोना से बचाव के लिए जागरूक करने का कार्य भी किया। उन्हें मास्क लगाने, बार–बार साबुन से हाथ धोने तथा आपस में उचित दूरी बनाये रखने के लिए सावधान किया गया।

यज्ञ के कार्यक्रमों में स्थान–स्थान पर स्वामी आदित्यवेश जी ने यज्ञ की वैज्ञानिकता तथा उससे होने वाले लाभों के बारे में भी बताया। उन्होंने बताया कि यज्ञ में विभिन्न क्रियाओं द्वारा काफी मात्रा में फॉर्मलडिहाइड गैस उत्पन्न होती है। जो शक्तिशाली कृमि रोधक, लाभदायक, कृमिनाशक तथा धूल को कृमि रहित करने वाली मानी गयी है। यह वाष्पशील होने के कारण शीघ्र ही सर्वत्र फैल जाती है। यह धागे के रंग को खराब किए बिना कपड़ों के बीच से निकल जाती है। इसलिए इसे रोगियों के कमरों को स्वच्छ बनाने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है। वायु की शुद्धि के लिए घरों में फॉर्मलडिहाइड लैंप बनाए जाते हैं। इन लैम्पों में मैथिल एल्कोहल तथा वायु को गर्म प्लैटिनम के ऊपर जलाकर फॉर्मलडिहाइड बनाया जाता है फॉर्मलडिहाइड के साथ कुछ पानी भी उत्पन्न होता है और पानी की विद्यमानता से ही यह फॉर्मलडिहाइड कृमियों का नाश करता है। यज्ञ में जहां अन्य कारणों से फॉर्मलडिहाइड बनता है वहीं सिनीऑल भी बनता है यह भी कृमि नाशक है।

वरिष्ठ आर्य संन्यासी स्वामी चंद्रवेश जी ने बताया कि यज्ञ को हमारे ऋषियों ने दोनों समय करने की व्यवस्था दी है। आखिर इसको हमारे दैनिक जीवन में इतना महत्व क्यों दिया गया है। इसीलिए इसकी वैज्ञानिकता को समझना आवश्यक है। प्रत्येक व्यक्ति घर में रहते हुए अपने शरीर से दुर्गंध मलीनता एवं गंदगी छोड़ता रहता है। मुंह से कार्बन डाइऑक्साइड त्वचा से पसीना, मल–मूत्र, आंख नाक–कान से मैल तथा नाखूनों व बाल भी शरीर के विजातीय तत्व हैं। जिन्हें हम बाहर छोड़ते रहते हैं अतः इनसे घर के वातावरण को रहित कर शुद्ध बनाना हमारे लिए अत्यंत आवश्यक है। जो यज्ञ द्वारा ही संभव है।

यज्ञ के इस कार्य में प्रवेश आर्या, पूनम आर्या,अजयपाल आर्य, राजबीर वशिष्ठ, रजनेश आर्य, नवीन वशिष्ठ, आर्य मनीष जी का विशेष सहयोग रहा।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वेबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।